ISSN:2583-8849



राजकुमार इन्द्रेश
जयपुर, राजस्थान

बंजारा बस्ती

स्वतंत्रता दिवस का राष्ट्रीय पर्व। स्कूल का चौक खचाखच भरा था। भादों माह की शीतल समीर चल रही थी और काले बादलों से नीलांबर आच्छादित था। सामने सजा-धजा मंच था—देश का, गाँव का और स्कूल का बड़ा पर्व।

लाउडस्पीकर पर गीत बज रहा था—'मेरा रंग दे बसंती चोला, माये रंग दे बसंती चोला।'

डाइस लगी थी और माउथपीस सजा हुआ था। मुख्य द्वार पर एक संभ्रांत शिक्षिका कुछ बालिकाओं के साथ रंगोली सजा रही थीं। कुछ बालिकाएं उधर से आते-जाते बच्चों को रंगोली से दूर हटकर चलने का निर्देश दे रही थीं। ट्रे में प्रशस्ति-पत्र और प्रतीक-चिह्न सजाकर रखे गए थे। फूल-मालाएं सजी थीं, जो अव्वल विद्यार्थियों को बंटनी थीं। सरपंच मुख्य अतिथि के रूप में आने वाले थे। नाच-गान, नाटक और भाषण का कार्यक्रम था। पंचायत की तरफ से सभी आगंतुकों को लड्डू बंटने थे।

इस बार स्कूल कुछ नया-नया सजा-धजा लग रहा था। नया प्रिंसिपल, मेन गेट पर तिरंगा कलर और परिसर में इमली के पेड़ों को भी तिरंगे के रंगों में रंगा गया था। पानी की टंकी को भी तिरंगे रंग में सजाया गया था। गेट के बाहर, दीवार के पास के झाड़-झंखाड़ साफ कर दिए गए थे। टेंट लगा था और बच्चों के बैठने के लिए कालीन बिछी थी। आगंतुक ग्रामीणों के लिए स्कूल के स्टूलों की जगह नई चमचमाती लाल रंग की टेंट की कुर्सियां सज रही थीं। बच्चे अपनी-अपनी कक्षा की पंक्ति में बैठ गए थे। जिन छात्र-छात्राओं को सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लेना था, वे मंच के पीछे एक कमरे में सांस्कृतिक प्रभारी के साथ अंतिम तैयारी में जुटे थे।

सरपंच गाँव की सबसे बड़ी हस्ती होती है। वे गाँव के सभी छोटे स्कूलों में ध्वजारोहण कर मुख्य कार्यक्रम में वार्डपंचों, सचिव व कई गणमान्य लोगों के साथ पहुँचे। गेट पर स्वागत में प्रधानाचार्य, स्टाफ व ग्रामीण खड़े थे। कुछ सजी-धजी बालिकाओं ने पुष्प-वर्षा की, रोली-मोली से तिलक किया और प्रधानाचार्य ने माला पहनाकर स्वागत किया।

समाज व्यक्ति के कार्यों से ही उसका आकलन करता है। उपस्थित जनसमूह की आँखें आश्चर्य से इधर-उधर देखकर स्कूल का कायापलट निहार रही थीं। मानो उनकी आँखें बोल रही हों—असीम उत्साह, अपार हर्ष! हर चेहरा खुशी में दमक रहा था और देशभक्ति का जज़्बा छलक रहा था। गाँव के स्त्री-पुरुष, बूढ़े-जवान, बाल-बच्चे सब रंग-बिरंगी वेशभूषा पहने मारे खुशी के फूले न समा रहे थे। सोने पर सुहागा था स्कूल का सौंदर्यीकरण! बड़े ही हर्षोल्लास के साथ राष्ट्रीयता का पर्व मनाया जा रहा था—जैसे ग्रामीणों का कोई छोटा-सा मेला लगा हो। आज आजादी का झंडा फहराया जाना था।

दरियों के एक कोने पर, जहाँ बच्चों ने अपने जूते-चप्पल खोल रखे थे, गरीबी की खरपतवार में पले दस-बारह महिलाएँ, आठ-दस बच्चे और पाँच-सात पुरुष मैले-कुचैले, फटे-पुराने कपड़ों में एक अलग ही दुनिया के लोग बनकर बैठे थे। मानो हरे-भरे खेत में सींव लगी क्यारी को आने-जाने वालों ने रौंद दिया हो।

सरपंच और प्रधानाचार्य ने ध्वजारोहण किया। राष्ट्रगान और स्वागत गीत हुआ। मंचस्थ अतिथियों का स्वागत किया गया। कई छात्र-छात्राओं ने नृत्य प्रस्तुत किया, जिन्हें संबल और सरपंच से नकद इनाम मिला।

गोविंद सपेरा—कक्षा पाँच का छात्र। उसने महिला के कपड़े पहनकर शानदार एकल प्रस्तुति दी। उपस्थित जनसमूह के हाथों से स्वतः ही करतल ध्वनि बज उठी। वह माँ के साथ होटल में रात्रि रंगमंच प्रस्तुति का अभ्यास करता था, लेकिन उसे कोई इनाम नहीं मिला। इनाम भी शायद कला को नहीं, वोट बैंक देखकर दिया जाता है।

प्रधानाचार्य का उद्बोधन शुरू हुआ। विद्यालय की प्रगति का प्रतिवेदन, आगामी योजनाएँ और विद्यालय विकास प्रबंध समिति के प्रस्ताव में बंदरों के आतंक से निजात पाने के लिए स्टाफ द्वारा एक लाख की लागत से बरामदे में लोहे का जाल लगाने की घोषणा की गई। प्रधानाचार्य ने मौके की नज़ाकत को देखते हुए बंजारा बस्ती के बच्चों की शिक्षा की बात उठाई, "माननीय सरपंच महोदय, मेरे मन में एक विचार है। बंजारा बस्ती के पैंतीस बच्चे विद्यालय में नामांकित हैं, परंतु उनका ठहराव नहीं है। मैं चाहता हूँ कि यदि बच्चे स्कूल नहीं आ सकते, तो स्कूल बच्चों के पास चलकर जाए। विद्यालय विकास प्रबंध समिति इसकी मंजूरी प्रदान करे।"

बात समझते-समझते समझ में आई। जिन हाथों में पुस्तक होनी चाहिए थी, वे खेत-झाड़ और जंगल में बकरियां चराते हैं या क्रेशर पर काम करती माँ के नवजात को संभालते हैं।

एक वार्डपंच बीच में बोला, "बात पूरी समझाओ हेड साब!"

प्रधानाचार्य ने विस्तार से बताते हुए कहा, "वार्डपंच साहब, बंजारा बस्ती के बच्चे लाख प्रयास करने पर भी रोजाना स्कूल नहीं आते। सरकारी योजना का लाभ जिस दिन मिलता है, बस उसी दिन आते हैं। बाकी दिन घर रहकर गृहस्थी के काम में लगे रहते हैं। मैं चाहता हूँ कि स्कूल से रोज एक शिक्षक बंजारा बस्ती जाए और..." (कुछ रुककर...) "...और उन बच्चों को दो घंटे पढ़ाकर आए।"

सरपंच और उपस्थित जनसमूह ने मंजूरी दे दी। किंतु जिन शिक्षकों को बस्ती में जाना पड़ता, उनके चेहरे स्याह पड़ गए।

एक कोने में गुट बनाकर खड़े शिक्षकों में से हरिराम ने धीरे से कहा, "यह नया प्रिंसिपल भी न! मैं तो कहता हूँ कि जहाँ रोटियों के लाले हों, वहाँ झूले नहीं पड़ते। उस मैली-कुचैली बस्ती में, जहाँ पन्नी-मोमजामे से बने डेरे हैं और जो ऊँचे-नीचे गड्ढों में बसी है, बरसात में चप्पल-जूते पहनकर निकल नहीं सकते। गड्ढों में पैर गिर जाए तो टांग टूट जाए, मिट्टी में कपड़े सन जाएँ। कौन जाएगा वहाँ?"

शिक्षक का इशारा पाकर वार्डपंच बीच में बोला, "साहब, जगह कहाँ है वहाँ पर?"

सरपंच उदय सिंह ने वार्डपंच से कहा, "आप बैठिए, मैं और हेड साब जाकर बस्ती में जगह चिह्नित करेंगे।"

मुखिया का मुखिया कौन? उसके सामने बोले कौन? सब शांत हो गए। विरोधी विरोध किए बिना रह सकता है, पर चालबाज़ी के बिना नहीं। बिना चाँद की रात में तारे भी ज़्यादा चमकते हैं।

हरिराम साजिश और षड्यंत्र रचने में माहिर था। रात में वह वार्डपंच के घर जाकर समझाने लगा, "बंजारे पढ़-लिख गए तो वे राशन कार्ड की माँग करेंगे, वोटर लिस्ट में अपना नाम जुड़वाने को कहेंगे। मैं बीएलओ हूँ, नाम जोड़ने पड़ेंगे। उनका वार्डपंच बनेगा, फिर आपको कौन पूछेगा?"

ज़्यादा तपिश से धरा भी लावा उगलती है, चिंगारी भी हवा के झोंके से सुलग उठती है। हरिराम की विचारधारा से वार्डपंच के अंतस में क्रोध उपजा। मुँह से क्रोध में प्रत्युत्तर निकला, "ऐसा नहीं होगा!"

सरपंच काम में व्यस्त थे। एक सप्ताह निकल गया। दूसरे सप्ताह प्रधानाचार्य ने मोबाइल पर बात करके अमावस्या के दिन बंजारा बस्ती चलने का समय तय किया, पर समय नहीं मिल सका।

(2)

स्कूल का गेट। प्रिंसिपल की कार रुकी। मध्यम कद, गोल चेहरा, सलीके से संवरे बाल, चेक का ब्लेजर पहने, सफेद शर्ट पर लाल बेलबूटे की टाई और चमचमाते काले जूते पहने प्रिंसिपल कार से उतरे। सुबह के साढ़े सात बज रहे थे। स्कूल का गेट खुला था।

विद्यार्थी व शिक्षक पहुँच गए थे। स्कूल की टाइम बेल साढ़े सात बजे की लंबी घंटी बजा रही थी। पीटीआई की सीटी विद्यार्थियों को प्रार्थना स्थल पर एकत्र होने का संकेत दे रही थी। विद्यार्थी अपनी-अपनी कक्षा की पंक्ति में पंक्तिबद्ध खड़े हो रहे थे।

मेन गेट के बाहर बंजारा बस्ती के दस-बारह स्त्री-पुरुष खड़े इंतज़ार कर रहे थे। ई-मित्र वाले ने बड़े साहब के दस्तख़त के लिए कहा था।

गरीबी की मार से दुबले-पतले, उतरन पहने दो-तीन युवक; सींक-सी पतली, कटीले नयन-नक्श, काजल लगी आँखों वाली और हाथों में कचकड़े की ढीली चूड़ियाँ पहने, छोटा काला-पीला लहंगा और पीली-नीली ओढ़नी ओढ़े तीन-चार बंजारिनें; और उनकी गोद में अर्धनग्न, पसली-पसली दिखते बच्चे।

मोहन ई-मित्र वाला, सूरज बंजारा के साथ हाथ में कागज़ों का पुलिंदा लिए ऑफिस के गेट पर पहुँचा, "सर, अंदर आ जाएं?"

"आ जाओ," प्रधानाचार्य ने बिना उनकी तरफ देखे ही कहा।

मोहन बोला, "सर, ये बंजारा बस्ती के लोग हैं। इनका जनआधार बनना है, राजपत्रित अधिकारी के हस्ताक्षर चाहिए।"

"आप क्यों आए हैं?" प्रधानाचार्य ने ऊँची आवाज़ में कहा।

"सर, यह जानते नहीं।"

"क्या नहीं जानते?... इनको जानने दें, तब जानेंगे ना! आप जाइए, दस्तावेज इसे दे दो," पास खड़े सूरज बंजारा की तरफ इशारा करके प्रधानाचार्य ने कहा। नाक -भौं सिकोड़ते हुए और आँखें तरेरते हुए मोहन कागज़ों का पुलिंदा सूरज बंजारा को देकर बाहर निकल गया।

"बैठो, बात करनी है तुमसे," प्रधानाचार्य ने सूरज को बैठने का इशारा किया।

सूरज लंबी कद-काठी का व्यक्ति था। चेहरे पर हल्की-हल्की उगी दाढ़ी-मूँछ और कानों तक झूलते बाल थे, जिन पर काला दुपट्टा बाँधा हुआ था। सांवले वर्ण पर कई सलवटों वाला कुर्ता-पाजामा और पैरों में घिसी-पिटी सैंडिल थी। वह मन में अज्ञात भय सँजोए सिमटकर कुर्सी पर बैठ गया।

"आप लोग शिक्षा के महत्व को कब समझोगे?" कुछ देर रुककर, "कब तक दूसरों को साथ लेकर अपना काम करवाते रहोगे? अपने बच्चों को रोज स्कूल क्यों नहीं भेजते?" प्रधानाचार्य ने प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

सूरज अबूझ-सा चौकन्ना होकर साहस बटोरकर बोला, "साब, सब परिस्थिति करवाती है। जानवर चराते मेरी पढ़ाई छूट गई। तीन जमात पढ़ा। स्कूल के मास्टर साहब बहुत अच्छे थे। किताब, पाटी, पेंसिल और कपड़े भी दिए। फिर हमारा डेरा उठ गया। हमारी जिंदगी तो चलती-फिरती रहती है। काम मिल जाता है तो कमा लेते हैं, खा लेते हैं।" बोलते-बोलते वह हाथ की अँगुलियाँ चटकाने लगा।

कुछ देर बाद फिर बोला, "जन्मजात खेल-तमाशा दिखाने का पेशा सरकार ने कानून बनाकर छुड़वा दिया। दस बरस हो गए।"

"भाई सूरज, आप लोग कब शिक्षा का महत्व समझोगे? कब तक दर-ब-दर भटकते रहोगे?" प्रधानाचार्य ने समझाते हुए कहा।

"साब, स्कूल दूर पड़ता है, तो बच्चे आते नहीं," सूरज ने कहा।

"ठीक है, कल सुबह मैं बस्ती में आऊँगा," कागज़ों पर हस्ताक्षर करते हुए प्रधानाचार्य ने कहा। कागज़ मिलते ही सब प्रधानाचार्य के पैर छूते हुए बाहर निकल गए।

(3)

अगस्त माह की सड़ी गर्मी थी। कभी धूप, तो कभी बादलों की छाँव। वादे के पक्के प्रधानाचार्य आज एक शिक्षक लक्ष्मी लाल को अपने साथ लेकर बंजारा बस्ती पहुँचे। कार बंजारा बस्ती तक पहुँच नहीं सकती थी, इसलिए दूर सड़क किनारे खड़ी करके वे पैदल ही कीचड़ में से होते हुए बस्ती तक पहुँचे।

बस्ती के चौक में शहतूत के पेड़ के नीचे बने एक चबूतरे पर मिट्टी-गोबर से लिपी-पुती दीवार के सहारे बासा की मूर्तियाँ खड़ी थीं। मूर्तियों पर तेल-सिंदूर चुपड़ा हुआ था और जली हुई अगरबत्तियों के कई

डंठल तितर-बितर पड़े थे। चबूतरे पर पाँच-सात अधेड़ उम्र के बंजारे, कालबेलिया व एक-दो नाथ जाति के लोग बैठकर किसी खास उत्सव की शराब पार्टी की तैयारी में थे। उनके बीच दो शराब की बोतलें और तीन गिलास रखे थे। पुराने अखबार पर प्याज़ छीलकर रखे थे और एक थाली में दाल-सेव थे।

चारों ओर लकड़ियों के सहारे रुकी बाँस की खपच्चियों और काली-नीली पन्नियों से बनी झोपड़ियाँ थीं। इस दीनता पर प्रधानाचार्य की आँखें ज़्यादा देर टिकी न रह सकीं—मानो संसार भर की गरीबी की खान यहाँ एकत्र हो गई हो।

प्रधानाचार्य एवं साथी गुरुजी को आते देख वहाँ एकदम से हलचल मच गई। कोई शराब की बोतल छिपाने लगा, तो कोई प्याज़ और दाल-सेव। ऐसा लगा जैसे दाना चुगते कबूतरों पर किसी ने पत्थर फेंक दिया हो।

सूरज बंजारा अपनी मिचमिचाई आँखों को रगड़ते हुए प्रश्नवाचक दृष्टि से बोला, "गुरुजी... गुरुजी आप, सवेरे -सवेरे इधर?"

"हाँ सूरज, कल साहब ने कहा नहीं था कि मैं बस्ती में आऊँगा?" लक्ष्मी लाल ने कहा।

"अरे नैणुडी, कुर्सी ला जल्दी! बड़े मास्टर साहब आए हैं," सूरज ने अपनी झोंपड़ी की ओर मुँह करके ज़ोर से आवाज़ लगाई।

झोंपड़ी पर पड़ा लुगड़ी का पर्दा हटाकर नौ-दस बरस की एक दुबली-पतली लड़की निकली। उसके चेहरे पर सादगी थी और सिर पर पारंपरिक तरीके से ओढ़नी। फटे-पुराने कपड़े—उसने हरे रंग का चोली-नुमा ब्लाउज और नीले रंग का घाघरा पहना हुआ था, जो जगह-जगह से फटा हुआ उसकी गरीबी और संघर्ष को बयाँ कर रहा था। पास आने पर पहचान में आई, वह स्कूल में पाँचवीं कक्षा में पढ़ने वाली नैना बंजारा थी। नैना की गोद में दो-तीन वर्ष का एक छोटा बच्चा था, जिसे उसने बड़े ही ममतामयी और सुरक्षित भाव से एक हाथ से संभाल रखा था। अपने दाहिने हाथ से उसने प्लास्टिक की एक पुरानी भूरे रंग की कुर्सी थाम रखी थी, जिसका एक हत्था टूटा हुआ था।

पीछे ढलवाँ छतों वाली बाँस-पन्नी की झोपड़ियाँ दिखाई दे रही थीं, जिन पर काले-नीले रंग के तिरपाल डले हुए थे। धूप और छाँव से बचाव के लिए ऊपर एक अस्थायी कपड़े का तंबू भी तना हुआ था। बस्ती में कुछ महिलाएँ और बच्चे घूमते दिखाई दे रहे थे। कपड़े सूखने के लिए रस्सियों पर टँगे थे। ज़मीन पर मिट्टी और धातु के कुछ बर्तन, मटके और पतीले रखे थे। बाईं ओर कुछ बकरियाँ और मुर्गियाँ भी टहलती नज़र आ रही थीं। पूरी बस्ती की ज़मीन कच्ची, पथरीली और धूलभरी थी। बस्ती चारों ओर से जंगली पौधों और झाड़ियों से घिरी थी, जो इस कठिन जीवन को उजागर कर रही थी। भादों मास की सड़ी उमस में हर बदन से बदबू आ रही थी। आज का सूरज एक तिहाई आकाश चढ़ आया था।

नैना ने कुर्सी रखते हुए प्रधानाचार्य व लक्ष्मी लाल गुरुजी के पैर छुए।

"नैना, स्कूल क्यों नहीं आती?"

"गुरुजी, माँ क्रेशर पर काम करने चली जाती है, बाप दारू पीता है। पाँच भाई-बहनों, बकरियों और मुर्गे-मुर्गियों को कौन संभाले?" उसकी आँखों में स्कूल न जा पाने की व्यथा स्पष्ट दिख रही थी।

"बेटा, अगर रोज कोई एक गुरुजी बस्ती में पढ़ाने आएं, तब तो तुम पढ़ोगी?" प्रधानाचार्य ने नैना के सिर पर हाथ रखते हुए पूछा।

नैना आत्मविश्वास के साथ बोली, "हाँ गुरुजी, तब तो मैं ही नहीं, सब बालक पढ़ेंगे।"

"ठीक है, तो कल सुबह से इस बासा के चबूतरे को साफ कर लेना। मैं स्कूल से एक बोर्ड और कुर्सी भिजवा दूँगा। रोज एक गुरुजी आएँगे और दो घंटे तुम सबको पढ़ाकर जाएँगे। तुम सब बच्चों को बुलाकर रखना।" प्रधानाचार्य ने नैना को एक नई जिम्मेदारी सौंप दी।

"जी गुरुजी... बीच-बीच में मुझे घर का काम भी करना पड़ेगा, वह तो कर सकूँगी न मैं?" नैना ने पूछा।

"हाँ, कर लेना।"

जब दोनों गुरुजी चलने लगे तो सूरज बंजारा ने कहा, "गुरुजी बैठो, चाय-पानी पीजिए।"

"अरे नहीं भाई! वैसे आज किस खुशी में पार्टी कर रहे

?" प्रधानाचार्य ने पूछा।
कुछ झिझकते हुए सूरज बंजारा बोला, "वह नैना की सगाई पक्की की है, उसी की खुशी में भाइयों के साथ बैठे हैं।"
"सगाई?"
"हाँ।"
"तुम्हें पता है बाल विवाह करना कानूनी अपराध है?"
"यह सब हम क्या जानें?"
"वैसे भी नैना बहुत छोटी है और पढ़ने में भी अव्वल है। इसे पढ़ाओगे तो यह लड़की तुम्हारा और तुम्हारे डेरे का जीवन सुधार देगी। जल्दी शादी करके ऐसी गलती मत करना, शिक्षा का महत्व समझो। मेरे माता-पिता भी दिल्ली शहर में मजदूरी करते थे। उन्होंने शिक्षा का महत्व समझा, तभी आज मैं आपके सामने हूँ।"
यह कहते हुए दोनों गुरुजी अगले डेरे की ओर बढ़ गए। बाहर से आवाज़ लगाई, "कोई है क्या अंदर?"
अंदर से एक बच्चे की आवाज़ आई, "कौन?"
दोनों गुरुजी अंदर गए तो देखा कि गोविंद सपेरा एक बकरी के बच्चे के साथ चारपाई पर उलझलूल पड़े सामान के बीच खेल रहा था।
"स्कूल क्यों नहीं आया?" लक्ष्मी लाल ने पूछा।
"गुरुजी, माँ पास के होटल में डांस करने गई है, बापू का पता नहीं। बकरा-ईद के लिए माँ ने यह बकरा पाल रखा है, तो इसकी रखवाली के लिए स्कूल नहीं आ रहा।"
"बकरे की रखवाली के लिए?" लक्ष्मी लाल गुरुजी ने अचरज से पूछा।
"हाँ गुरुजी, पास वाले डेरे में कल नैना की सगाई हुई है। उस डेरे के लोग पार्टी करेंगे, उन सबकी नज़र हमारे बकरे पर है। उसे चुराकर काट खाएँगे, इसलिए माँ ने स्कूल जाने से रोक रखा है।"
अजीब-अजीब समस्याएँ सुनकर प्रधानाचार्य अवाक रह गए। "अच्छा, कल से स्कूल यहाँ बस्ती में ही चलेगा, तब तो तुम यहाँ पढ़ने आओगे?"
"हाँ, यहाँ तो मैं अपने डेरे का ध्यान भी रख लूँगा और पढ़ाई भी कर लूँगा।"
लक्ष्मी लाल गुरुजी ने प्रधानाचार्य से पूछा, "साहब, हम यह कर तो रहे हैं, कहीं कोई शिकायत तो नहीं हो जाएगी?"
"होने दो शिकायत! हम कोई अन्याय तो कर नहीं रहे। बच्चे स्कूल नहीं आ रहे, तो हम स्कूल को बच्चों तक ले जा रहे हैं," प्रधानाचार्य ने दृढ़ संकल्प के साथ कहा।
"साहब, आपकी हिम्मत की दाद देनी पड़ेगी। स्टाफ में भी कुछ विरोधी हैं, पर आपके सामने बोलने की हिम्मत नहीं होती। आपकी पीठ पीछे कई बातें करते रहते हैं। आप सावधान रहना, आपका ट्रांसफर भी करवा सकते हैं।"
"ट्रांसफर कोई सजा नहीं है। वैसे भी मैं अपना कर्तव्य ईमानदारी से निभा रहा हूँ। समुद्र के किनारे खड़े होकर देखने मात्र से समुद्र पार नहीं होता, उसके लिए हाथ-पैर हिलाने पड़ते हैं।"
स्कूल चलने लगा और बच्चे पढ़ने लगे। रोज स्कूल से एक शिक्षक दो घंटे पढ़ाने जाने लगा। हरिराम को वहाँ जाना नागवार गुज़रा और वह मन ही मन आक्रोश में घुटने लगा। लोगों को अच्छा काम कम ही पसंद आता है। नवंबर माह में प्रधानाचार्य का दूरस्थ क्षेत्र में स्थानांतरण हो गया। बंजारा बस्ती के स्कूल का बोर्ड और कुर्सी वापस मुख्य स्कूल में आ गए।

(4)

नवंबर की विदाई के साथ ही बंजारा बस्ती पर दिसंबर की कड़ाके की ठंड और उदासी की एक चादर-सी तन गई थी। प्रधानाचार्य का स्थानांतरण होते ही बस्ती के चबूतरे से वह ब्लैकबोर्ड और कुर्सी क्या हटी, मानो बच्चों की आँखों से सुनहरे सपने ही छीन लिए गए हों। हरिराम और उनके गुट के चेहरे पर जीत की कुटिल मुस्कान थी, लेकिन नैना के भीतर अंदर ही अंदर एक ज्वालामुखी सुलग रहा था।
दिसंबर की शुरुआत होते ही सूरज बंजारा के डेरे पर शादी की ढोलक की थाप सुनाई देने लगी। पीली-नीली ओढ़नी वाली औरतें मंगल गीत गाने लगीं, लेकिन नैना के पैर हल्दी के थापे देखकर नहीं, बल्कि अपनी आजादी छिन जाने के डर से काँप रहे थे।

"मैं ब्याह कोनी करूँ बापू! मने पढ़ना है," नैना ने रोते हुए सूरज के सामने विरोध का बिगुल फूँक दिया।

सूरज ने शराब के नशे में धुत होकर डाँटा, "चुप कर छोरी! जात-बिरादरी में नाक कटवाएगी क्या? बंजारों में लड़कियाँ पढ़-लिखकर कलक्टर कोनी बनतीं। चुपचाप बैठ जा!"

बस्ती में कोई उसकी सुनने वाला नहीं था। हारकर नैना ने हिम्मत जुटाई और एक दिन दोपहर के समय छिपते-छिपाते गाँव के स्कूल के पास पहुँची। वहाँ उसे लक्ष्मी लाल गुरुजी मिल गए, जिनकी आँखों में आज भी उन बच्चों के लिए दर्द था।

"गुरुजी, बापू मेरा ब्याह कर रहे हैं। बड़े साहब का नंबर दे दो, वही कुछ रास्ता निकालेंगे," नैना ने आँसू पोंछते हुए गुहार लगाई।

लक्ष्मी लाल ने चारों तरफ देखा कि कहीं हरिराम न देख ले, और फुर्ती से पर्ची पर नंबर लिखकर नैना को थमा दिया।

बस्ती के पीछे झाड़ियों के पास जाकर नैना ने एक पड़ोसी के मोबाइल से प्रधानाचार्य जी को फोन लगाया। घंटी बजी और उधर से वही गंभीर, आत्मीय आवाज़ आई, "हाँ, कौन?"

"साहब, मैं नैना... बंजारा बस्ती से!" नैना का गला भर आया।

प्रधानाचार्य पल भर के लिए खामोश हुए, फिर बोले, "हाँ बेटा नैना, बोलो। कैसी हो? पढ़ाई कैसी चल रही है?"

"साहब, स्कूल तो बंद हो गयो, और बापू ने दिसंबर में मेरा ब्याह तय कर दियो है। मैं पढ़ना चाहूँ साहब, मने बचा लो!" नैना फोन पर फूट-फूटकर रो पड़ी।

प्रधानाचार्य का खून खौल उठा, लेकिन उन्होंने खुद को संभाला। वे जानते थे कि दूर रहकर वे सीधे दखल नहीं दे सकते, इसलिए उन्होंने अपने प्रशासनिक अनुभव का इस्तेमाल किया। उन्होंने कहा, "रो मत बेटा, हौसला रख! परसों रात को गाँव के पंचायत भवन में जिला कलक्टर साहब की 'रात्रि चौपाल' है। कलक्टर साहब खुद वहाँ लोगों की समस्याएँ सुनेंगे। तुम लक्ष्मी लाल गुरुजी को साथ लेकर वहाँ जाना और अपनी व्यथा का एक प्रार्थना-पत्र कलक्टर साहब के हाथ में दे देना। मैं लक्ष्मी लाल से बात कर लूँगा।"

(5)

अमावस्या की काली रात थी। पंचायत भवन के बाहर अलाव जल रहे थे। जिला कलक्टर की गाड़ी के सायरन की रोशनी से पूरा परिसर चमक रहा था। गाँव के संभ्रांत लोग, सरपंच उदय सिंह, वार्डपंच और शिक्षक हरिराम अग्रिम पंक्तियों में बैठे अपनी पीठ थपथपाने की तैयारी में थे।

तभी भीड़ को चीरती हुई ग्यारह साल की नैना, लक्ष्मी लाल गुरुजी की ओट में आगे बढ़ी। उसके हाथ में एक प्रार्थना-पत्र था। हरिराम ने जब नैना और लक्ष्मी लाल को देखा, तो उसके चेहरे का रंग उड़ गया। उसने वार्डपंच को कोहनी मारी, पर अब बहुत देर हो चुकी थी।

नैना सीधे कलक्टर साहब की मेज के सामने जाकर खड़ी हो गई।

"क्या बात है बच्ची? यहाँ क्या कर रही हो?" युवा कलक्टर साहब ने उसकी फटी हुई ओढ़नी और आँखों में तैरते अंगारों को देखकर नरमी से पूछा।

नैना ने काँपते हाथों से प्रार्थना-पत्र आगे बढ़ाया और कहा, "साहब, म्हारा ब्याह रुकवा दो। मने और म्हारी बस्ती के टाबरों को पढ़ा दो।"

कलक्टर साहब ने पत्र पढ़ा, जिसमें प्रधानाचार्य के प्रयासों और उनके तबादले के बाद स्कूल बंद होने की पूरी कहानी दर्ज थी। कलक्टर साहब ने गंभीर होकर पूछा, "क्या नाम है तुम्हारा? और तुम स्कूल क्यों नहीं जाती?"

नैना ने निडर होकर बोलना शुरू किया। उसकी आवाज़ में पूरी बस्ती का दर्द था, "साहब, मेरा नाम नैना है। माँ क्रेशर पर पत्थर तोड़े है, बापू दारू पीवे है। छोटे भाई-बहनों को संभालूँ, बकरियाँ चराऊँ, तब भी बड़े साहब ने हमारे लिए बस्ती में स्कूल चलाया था। हम सब बालक पढ़ रहे थे

पर बड़े साहब का तबादला हो गयो, तो हमारा स्कूल भी छिन गयो। अब बापू मेरा विवाह कर रहे हैं। साहब, जिन हाथों में किताब होनी चाहिए, उन्हें चूल्हे-चौके में मत झोंको। हमारे डेरे का अंधेरा दूर कर दो साहब!"

नैना की बातें सुनकर चौपाल में सन्नाटा पसर गया। कलक्टर साहब की आँखें नम हो गईं। उन्होंने तुरंत मंच से कड़कती आवाज़ में पूछा, "इस गाँव के सरपंच और बीएलओ कौन हैं? और बंजारा बस्ती के बच्चों का स्कूल क्यों बंद किया गया?"

सरपंच उदय सिंह और हरिराम उठकर खड़े हुए, दोनों के पैर काँप रहे थे।

"साहब... वह... जगह नहीं थी वहाँ..." हरिराम ने हकलाते हुए बहाना बनाना चाहा।

"चुप रहिए!" कलक्टर साहब ने डाँटते हुए कहा, "अगर कोई स्कूल बच्चों तक जा रहा था, तो उसे रोकना अपराध है। और बाल विवाह? कानूनन जुर्म है!"

कलक्टर साहब ने तुरंत पुलिस उपाधीक्षक और विकास अधिकारी को मंच पर बुलाया और आदेश दिया, "सूरज बंजारा को पाबंद किया जाए कि नैना का विवाह अठारह साल से पहले न करे। अगर ऐसा हुआ तो सख्त कानूनी कार्रवाई की जाए। और सुनो विकास अधिकारी, बंजारा बस्ती में कल से ही वैकल्पिक शिक्षा केंद्र दोबारा शुरू होगा। जब तक पक्का कमरा नहीं बनता, तब तक टेंट लगाकर स्कूल चलाया जाए। और लक्ष्मी लाल जी..." कलक्टर साहब ने मुस्कुराकर गुरुजी को देखा, "...कल से आप ही वहाँ प्रभारी होंगे।"

तुरंत आदेश जारी कर दिए गए।

चौपाल में मौजूद ग्रामीणों ने तालियों से आसमान गुंजा दिया। नैना की आँखों से खुशी के आँसू बह रहे थे। दूर किसी कोने में खड़ा गोविंद सपेरा भी यह देखकर मुस्कुरा रहा था, क्योंकि अब उसे अपने बकरे की रखवाली के लिए स्कूल नहीं छोड़ना पड़ेगा।

बंजारा बस्ती में आज सचमुच आजादी का नया सूरज उगने वाला था।